रमणिका फाउंडेशन कार्यालय में उपलब्ध फाउंडेशन द्वारा तैयार की गई पुस्तकें

मुख्य कार्यालय : मेन रोड हजारी बाग, झारखंड-825301, फोन : 06546-226542
प्रशासनिक कार्यालय : 1516, प्रथम तल, वजीर नगर, कोटला मुबारकपुर, नई दिल्ली 110003
संपर्क कार्यालय : ए-221, डिफेंस कॉलोनी (ग्राउंड फ्लोर) नई दिल्ली-110024
फोन : 011-46577704, 011-24333356, मो. 09312039505, 09350039505
ई-मेल : ramnika01@Gmail.com **वेबसाइट :** www.ramnikafoundation.org
ई-मेल : yaddhrataamadmi@gmail.com **वेबसाइट :** www.aamadmi.org

आदिवासी पुस्तकें

पूर्वांचल एक कविता यात्रा

(1986)

रमणिका गुप्ता

पूर्वांचल एक कविता यात्रा कविता संग्रह, सं. रमणिका गुप्ता- प्रथम संस्करण, प्र.वर्ष 1985, द्वितीय संस्करण प्र. वर्ष 1994। यह रमणिका जी की मिजोरम, असम, दार्जिलिंग, मणिपुर आदि की यात्रा के दौरान वहाँ की आदिवासी संस्कृति व जीवन शैली पर लिखी गई कविताओं का संग्रह है। इस संकलन में रमणिका जी ने पूर्वांचल के प्रकृति का सौंदर्य के साथ-साथ वहां की सभ्यता को कविता के ताने-बाने में भी पिरोया है। वहां की अशांत स्थितियों ने भी रमणिका जी की संवेदना को छुआ है। पूर्वांचल की जन-भाषाओं के शब्दों के साथ-साथ वहाँ की आदिवासी लोक कथाएं और मिथक भी इन कविताओं को और अधिक संप्रेषणीय बनाते हैं। **(उपलब्ध नहीं हैं)**

मूल्य : 25/-

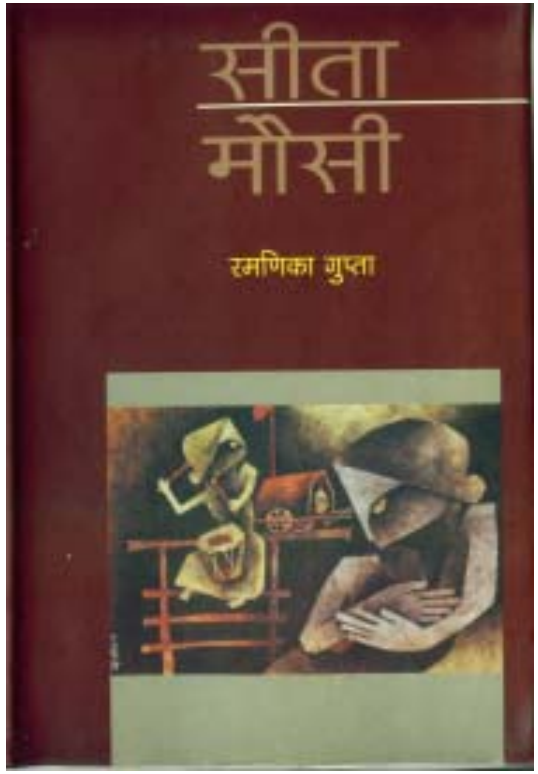

सीता/मौसी

(1996/1997/2010)

रमणिका गुप्ता

सीता उपन्यास : सं. रमणिका गुप्ता, प्र. : अनुराग प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र. वर्ष 1997/2012। त्याग और तपस्या की प्रतीक सीमा जब रामायण के युग से निकलकर आज के संघर्षों में भूख से जूझती हुई जवान होती है तो वह सर्वहारा-वर्ग के लिए आधुनिक रावणों से लड़ती है। आज की सीता जूझती है हर रिश्ते से, उम्र के हर मोड़ पर। उसने मौत से छीना है जिन्दगी को। सीता अब अपने से बाहर खड़ी सीताओं के लिए लड़ने लगी है। सीता अब एक कतार है, एक शृंखला है, एक पाँत है। पाँत जो चुप थी आज तक, अब बोलने लगी है। पाँत-जो जड़ थी सदियों से, अब फुँकारने लगी है। आज की सीता अपने बदलाव की बाढ़ में गली-सड़ी मानसिकता को बहाए ले जा रही है, समुद्र के गर्त में दफनाने के लिए। वह इंतजार में है कि कल जो सूरज निकले, जो हवा बहे, वह उस जैसी सीताओं के हिस्से में भी आए जिससे वे वंचित रही हैं सभ्यता के आने के बाद से। सीता ऐसी लपट है जो मनुष्यता के लिए उजाले बाँटती है और दानवता को जला कर राख करने में समर्थ है।

मूल्य : 225/-

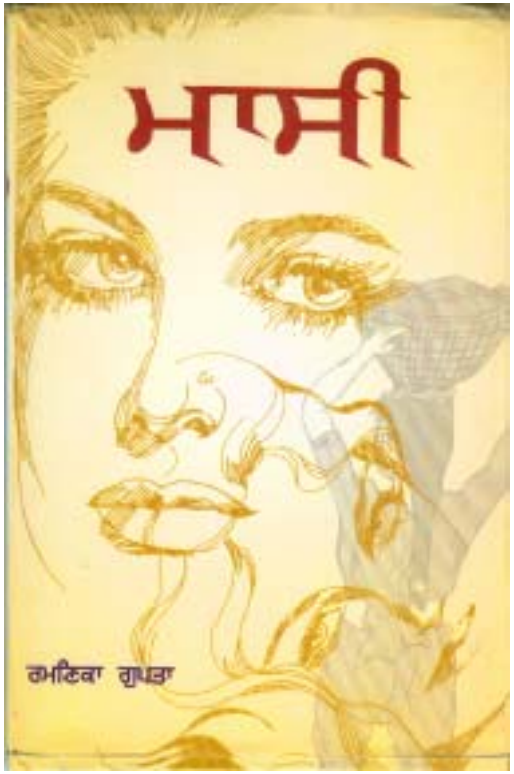

मॉसी (पंजाबी)

(1997/2003)

रमणिका गुप्ता

मौसी उपन्यास : सं. रमणिका गुप्ता, प्र. वर्ष 1997/2012। यह एक आदिवासी स्त्री के बेचैन कर देने वाले जीवन-संघर्ष का दस्तावेज है। कोयला खदानों का घुटन भरा जीवन, वहाँ की टुच्ची राजनीति, व्यक्तिगत स्वार्थ और उसमें सादा जीवन जीने वाली आदिवासी स्त्रियाँ। मासूम, मेहनती, अबोध, विश्वास से भरी लेकिन बार-बार छली जाती हुई। छलने वाले सभी जाति, धर्म, सम्प्रदाय और संबंध के होते हैं। इस उपन्यास की नायिका मौसी ऐसी ही एक आदिवासी स्त्री है जो। छोटा नागपुर के जंगलों से कोयला खानों में काम की तलाश में भटकती स्त्रियों की प्रतिनिधि पात्रा । अपने अस्तित्व के लिए संघर्षशील। जीने की हजार-हजार शर्तें। जीने के लिए बार-बार मर्द बदलने की त्रासदी। इस उपन्यास में आदिवासियों के समाजशास्त्र के अनेक पहलू उजागर होते हैं।

मूल्य : 225/-

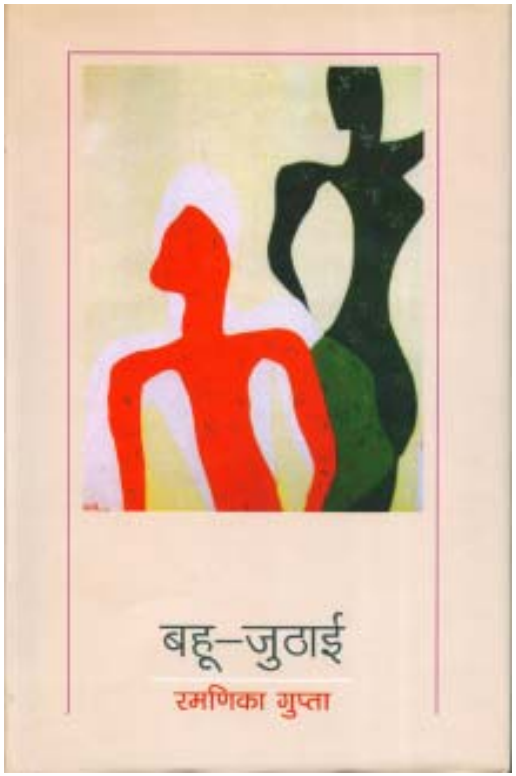

बहू-जुठाई

(1998/2010)

रमणिका गुप्ता

बहू-जुठाई - कहानी : सं. रमणिका गुप्ता, प्र. वर्ष 1998/2012। इस संग्रह में ग्यारह कहानियाँ हैं। खटने-कमाने वाली औरतों की ग्यारह कहानियाँ जो आदिवासी हैं या दलित हैं या पिछड़ी हैं। लेकिन ऊर्जा से भरी हैं। एक कहानी राजनैतिक महिला से संबंधित है। चिड़िया कहानी अकेली महसूस करती एक महिला की संवेदना भरी कहानी है। इन कहानियों में प्यारी हो या चम्पा, जिरवा हो या ललिता या दारू बेचने वाली मंझियाइन सब की सब जीवंत है। ये कहानियाँ एकदम यथार्थ से जुड़ी हैं। ये सभी पात्र बिल्कुल साधारण सर्वहारा हैं लेकिन जुझारूपन में असाधारण।

रमणिका जी की स्त्रियाँ आदिवासी दलित समाज की निर्बल इकाइयाँ हैं खटने-कमाने वाली औरतें वे व्यवस्था द्वारा लिखी इबारत को किसी ज्ञानी-ध्यानी से ज्यादा गहराई से पढ़-बूझ जाती हैं। हिन्दी लेखिकाओं पर 'काउच-लेखक' के आरोप का करार जवाब देता, दलित आदिवासियों के समाज-विज्ञान, नारियों के मनोविज्ञान तथा बिहार झारखण्ड के कोयलाचल के सामाजिक जीवन को हू-ब-हू उपस्थिति करता यह संकलन साहित्य और समाज-विज्ञान दोनों की दृष्टि से अपरिहार्य पुस्तक सिद्ध होगा। ***मूल्य : 225/-***

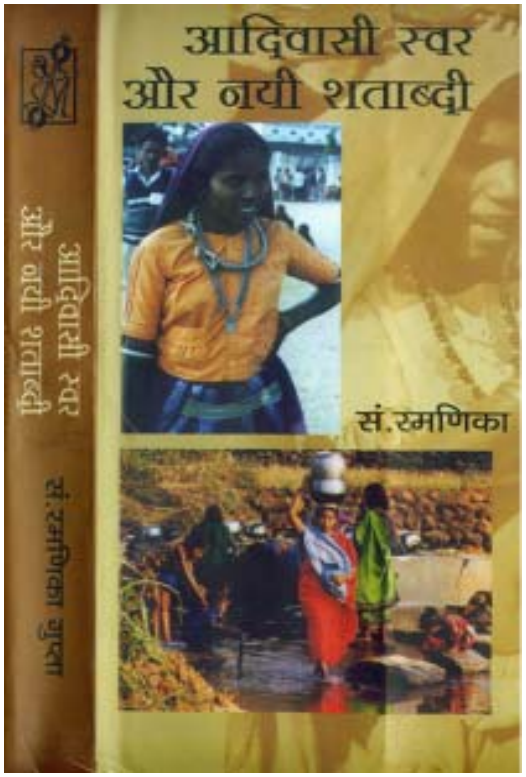

आदिवासी स्वर और नयी शताब्दी

(1998/2002)

लेखन : रमणिका गुप्ता

आदिवासी जो अब तक लोककथात्मक चरित्रों, किंवदंतियों और मिथकीय परिकल्पनाओं के रूप में हमारी संवेदना को रंगते रहे हैं, अब वे पुरानी दास्ता हो चुकी है।

नई शताब्दी में आदिवासी स्वर की स्वाभाविकता और सहजता को सृजनात्मक संदर्भों में विकास और विस्थापन का देश, आदिवासी संसाधनों और संस्कृति के साथ मनमाना व्यवहार, शोषण की निरंतरता, अशिक्षा और गरीबी और उससे उपजे असंतोष और प्रतिरोधी संघर्ष के संदर्भ विद्यमान हैं।

पुस्तक में खड़िया, कुडुख, नागपुरिया, भिलोरी, मराठी, मुंडारी, संताली, विरहोर, लम्बाड़ी के साथ कोंकर्णी, मलयाली, राजस्थानी और हल्बी से आदिवासियों द्वारा सृजित साहित्य को उपलब्धि के रूप में देखा जा सकता है।

रमणिका गुप्ता की 'आदिवासी स्वर और नई शताब्दी' की थीम पर यह एक उम्दा कृति है।

मूल्य : 350/-